

रोम में ब्रिटिश दूतावास पर बमबारी, 1946: एक साहसी राजनीतिक हिंसा का कृत्य

31 अक्टूबर, 1946 को रोम में पोर्टा पिया पर ब्रिटिश दूतावास एक विनाशकारी विस्फोट से हिल गया, जो इर्गुन ज्वाई लेउमी, एक संशोधनवादी ज़ायनिस्ट अर्धसैनिक समूह द्वारा चलाए गए राजनीतिक हिंसा के अभियान में एक महत्वपूर्ण वृद्धि को चिह्नित करता है। यह आतंकवादी हमला, यूरोपीय धरती पर ब्रिटिश कर्मियों के खिलाफ इर्गुन द्वारा अपनी तरह का पहला हमला था, जिसने समूह के उस दृढ़ संकल्प को रेखांकित किया जो ब्रिटिश नीतियों को चुनौती देता था, जो मंडेटरी पलेस्टाइन में यहूदी आब्रजन को प्रतिबंधित करती थीं। इस बमबारी में दो लोग घायल हुए, दूतावास के आवासीय हिस्से को अपूरणीय क्षति पहुंची, और अंतरराष्ट्रीय समुदाय में सदमे की लहरें फैल गईं, जिसने पलेस्टाइनी यहूदी संघर्ष की वैश्विक पहुंच को उजागर किया।

पृष्ठभूमि: इर्गुन और पलेस्टाइन के लिए संघर्ष

मेनकेम बेगिन के नेतृत्व में इर्गुन एक उग्रवादी संगठन था जो पलेस्टाइन में एक यहूदी राज्य की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध था। यह 1930 के दशक में गठित हुआ था, जब यह अधिक संयमित हगाना से अलग हो गया था, और ब्रिटिश शासन के खिलाफ सशस्त्र प्रतिरोध की वकालत करता था। 1939 का ब्रिटिश श्वेत पत्र, जिसने पलेस्टाइन में यहूदी आब्रजन को गंभीर रूप से सीमित कर दिया था, इर्गुन के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा था, खासकर जब होलोकास्ट की खबरों ने यहूदी मातृभूमि की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित किया। 1944 तक, बेगिन के नेतृत्व में, इर्गुन ने अपनी हिंसा की मुहिम को फिर से शुरू किया, नीति परिवर्तन को मजबूर करने के लिए ब्रिटिश प्रतिष्ठानों को निशाना बनाया।

रोम में ब्रिटिश दूतावास को निशाना बनाया गया क्योंकि इर्गुन का मानना ​​था कि यह “यहूदी-विरोधी साजिशों” का केंद्र था, जो पलेस्टाइन में अवैध यहूदी आब्रजन (अलियाह बेत) को बाधित करता था। उस समय, हजारों यहूदी शरणार्थी, जिनमें से कई होलोकास्ट से बचे थे, यूरोप भर में विस्थापित व्यक्तियों के शिविरों में रह रहे थे, जिनमें इटली भी शामिल था, जहां इर्गुन को भर्ती के लिए उपजाऊ जमीन मिली।

हमला: योजना और निष्पादन

बमबारी की योजना इर्गुन के कार्यकर्ताओं द्वारा सावधानीपूर्वक बनाई गई थी, जिन्होंने स्थानीय फासीवाद-विरोधी प्रतिरोध समूहों और बेतार युवा आंदोलन, एक संशोधनवादी ज़ायनिस्ट संगठन, के सदस्यों के समर्थन से इटली में एक नेटवर्क स्थापित किया। मार्च 1946 में, इर्गुन के सदस्यों, जिनमें डोव गुरविट्ज़ और टिबुर्जियो डीटेल जैसे शरणार्थी शामिल थे, ने रोम के विया सिसिलिया में मित्र देशों के खुफिया कार्यालयों के पास एक कवर कार्यालय स्थापित किया ताकि संचालन का समन्वय किया जा सके। इसके अलावा, ट्रिक्से और लाडिस्पोली में दो कमांडो प्रशिक्षण स्कूल स्थापित किए गए ताकि तोड़फोड़ मिशनों के लिए भर्तियों को तैयार किया जा सके।

31 अक्टूबर, 1946 की रात को, इर्गुन के कार्यकर्ता दो दस्तों में बंट गए। एक समूह ने ब्रिटिश कंसुलेट की दीवार पर एक बड़ा स्वास्तिक चिह्न बनाया, जो एक उकसाने वाला कार्य था जिसका उद्देश्य ब्रिटिश नीतियों को नाज़ी दमन के समान दिखाना था। दूसरा दस्ता विया XX सेटेंब्रे पर दूतावास के मुख्य प्रवेश द्वार की सीढ़ियों पर दो सूटकेस रखे, जिनमें 40 किलोग्राम टीएनटी था, जो टाइमर से लैस थे। एक ड्राइवर ने संदिग्ध सूटकेसों को देखा और इमारत में प्रवेश किया ताकि उनकी सूचना दी जा सके, लेकिन कोई कार्रवाई होने से पहले ही विस्फोटक फट गए, जिससे महत्वपूर्ण विनाश हुआ। दूतावास का आवासीय हिस्सा अपूरणीय रूप से नष्ट हो गया, लेकिन सौभाग्य से, केवल दो लोग घायल हुए। राजदूत नोएल चार्ल्स, जो एक प्रमुख लक्ष्य थे, छुट्टी पर थे, जिसने उन्हें हमले से बचा लिया।

परिणाम: जांच और गिरफ्तारियां

हमला जल्दी ही मंडेटरी पलेस्टाइन से आए विदेशी उग्रवादियों को जिम्मेदार ठहराया गया। ब्रिटिश सरकार के दबाव में, इतालवी पुलिस, काराबिनियरी, और मित्र देशों की सेनाओं ने बेतार के सदस्यों और इर्गुन से संबंधों के संदिग्ध यहूदी शरणार्थियों को निशाना बनाकर एक दमन अभियान शुरू किया। बमबारी के तुरंत बाद तीन संदिग्धों को गिरफ्तार किया गया, इसके बाद 4 नवंबर को दो और। दिसंबर में, रोम में इर्गुन के तोड़फोड़ स्कूल की खोज के साथ एक महत्वपूर्ण प्रगति हुई, जहां अधिकारियों ने पिस्तौल, गोला-बारूद, हथगोले, और प्रशिक्षण सामग्री जब्त की। गिरफ्तार किए गए लोगों में डोव गुरविट्ज़, टिबुर्जियो डीटेल, माइकल ब्राउन, डेविड विटेन, और एक प्रमुख कार्यकर्ता, तविन शामिल थे।

एक उल्लेखनीय गिरफ्तार व्यक्ति, इस्राइल (जेव) एप्सटीन, मेनकेम बेगिन का बचपन का दोस्त, 27 दिसंबर, 1946 को हिरासत से भागने की कोशिश की, लेकिन इस प्रयास में उसे गोली मार दी गई। ब्रिटिश ने संदिग्धों को इरिट्रिया के जेल शिविरों में प्रत्यर्पण की मांग की, लेकिन सभी को स्थानांतरित नहीं किया गया। दिसंबर 1946 तक, आठ गिरफ्तार लोगों में से पांच को रिहा कर दिया गया, और अमेरिकन लीग फॉर ए फ्री पलेस्टाइन ने शेष कैदियों की रिहाई की उम्मीद जताई।

इतालवी अधिकारियों ने, जो शुरू में भ्रमित थे, वैकल्पिक सिद्धांतों की भी जांच की। कुछ इतालवी समाचार पत्रों ने “ज़ायनिस्ट आतंकवादियों” के बारे में अनुमान लगाया, एक दावा जिसे इटली में यहूदी एजेंसी के डॉ. उम्बेर्तो नाचोन ने जोरदार ढंग से खारिज किया, यह तर्क देते हुए कि यहूदियों के पास ऐसा कार्य करने का कोई मकसद नहीं था और ब्रिटिशों के कई वैश्विक दुश्मन थे। 1948 के अभिलेखीय रिकॉर्ड ने बाद में इतालवी कम्युनिस्ट पार्टी की भागीदारी के संदेह को प्रकट किया, हालांकि इस सिद्धांत का समर्थन करने के लिए कोई निर्णायक सबूत नहीं मिला।

प्रभाव और विरासत

बमबारी के दूरगामी परिणाम हुए। इसने मई 1946 में MI5 के डेविड पेट्री द्वारा व्यक्त की गई आशंकाओं की पुष्टि की कि यहूदी आतंकवाद पलेस्टाइन से परे फैल रहा है। हमले ने ब्रिटिशों को अपमानित किया, जिसने इटली को सख्त आक्रांति नियंत्रण लागू करने और 31 मार्च, 1947 तक शरणार्थियों के लिए पंजीकरण की समय सीमा निर्धारित करने के लिए प्रेरित किया। इर्गुन के इटली में संचालन बाधित हुए, जिसने उन्हें अन्य यूरोपीय राजधानियों में स्थानांतरित होने के लिए मजबूर किया, जहां उन्होंने हमले जारी रखे, जैसे कि वियना में साखर होटल पर बमबारी, जो एक ब्रिटिश सैन्य मुख्यालय था।

बमबारी ने एंग्लो-इतालवी संबंधों को भी तनावग्रस्त किया और यूनाइटेड किंगडम में यहूदी-विरोधी भावनाओं को भड़काया, क्योंकि जनता हमले की साहसिकता से जूझ रही थी। यहूदी एजेंसी के नेताओं ने बमबारी की निंदा की और इर्गुन की रणनीति से दूरी बनाई, लेकिन इस घटना ने यहूदी प्रतिरोध आंदोलनों की विभाजनकारी प्रकृति को रेखांकित किया। इतालवी इतिहासकार फुरियो बियागिनी ने बाद में तर्क दिया कि इर्गुन के साहसी कार्यों ने, लेही और हगाना के साथ मिलकर, 1948 में ब्रिटेन के पलेस्टाइन से अंतिम वापसी में योगदान दिया, जो यहूदी एजेंसी के कूटनीतिक प्रयासों को पूरक करता था।

हमले के भौतिक निशान बने रहे। दूतावास की इमारत, जिसे 19वीं सदी में ब्रिटिशों ने खरीदा था, इतनी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई थी कि इसे एक नए ढांचे से बदल दिया गया, जिसे सर बेसिल स्पेंस ने डिज़ाइन किया और 1971 में खोला गया। इतालवी सरकार ने दूतावास कर्मचारियों के लिए सैन जियोवानी में रूसी राजकुमारी जिनाइदा वोल्कोस्काया के पूर्व निवास में अस्थायी आवास प्रदान किया, जिसे ब्रिटेन ने 1951 में औपचारिक रूप से खरीदा।

निष्कर्ष

रोम में ब्रिटिश दूतावास पर 1946 की बमबारी इर्गुन के ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों के खिलाफ अभियान में एक महत्वपूर्ण क्षण था। इसने समूह की पलेस्टाइन से परे शक्ति प्रदर्शित करने और युद्धोत्तर यूरोप के अराजकता का उपयोग अपने लक्ष्यों को आगे बढ़ाने की क्षमता को दिखाया। हालांकि हमले ने तत्काल सीमित सफलता हासिल की, इसने वैश्विक मंच पर ज़ायनिस्ट कारण को बढ़ावा दिया और उन दबावों में योगदान दिया जो 1948 में इज़राइल की स्थापना की ओर ले गए। फिर भी, इसने राजनीतिक हिंसा की नैतिक और रणनीतिक जटिलताओं को भी उजागर किया, जिसने एक विवादास्पद विरासत छोड़ी जो इतिहासकारों और नीति निर्माताओं के बीच बहस को प्रेरित करती रहती है।